परेड ग्राउन्ड मैदान में प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

दिनांक :28/9/1979
स्थान : दिल्ली

(रिकार्डिंग अपूर्ण)

मेरी पीढ़ी के लोग यह समझा करते थे कि देश के आजाद होने के बाद फिर ये बहुत बड़ा देश हो जायेगा, समृद्धशाली हो जायेगा, सैनिक दृष्टि से शक्तिशाली हो जायेगा लेकिन वो हमारा सब स्वप्न भंग हो चुका है। और उसके कारण हैं बहुत से, उनमें मैं जाना नहीं चाहता। मैं व्याख्यान देने के लिए नहीं आया था। यह तो दोस्तों ने मजबूर किया लेकिन एक बात जरूर कहूंगा जो इस अवसर पर मुझे शायद कहनी चाहिए। हमारी कौम की सबसे बड़ी खराबी यह है कि हम लोग मेहनत नहीं करते हैं, हम लोग सच बोलना भूल चुके हैं और आराम चाहते हैं, हर तरह का सुख चाहते हैं, लेकिन उसका दाम नहीं देना चाहते। दुनिया का नियम यह है कि किसी को कोई चीज हासिल नहीं होती है, जब तक उसकी कीमत आप अदा न करें।

(बीच की रिकार्डिंग नहीं है)

तो देश को समृद्धशाली बनाना है, मालदार बनाना है तो उसके लिए हमें पुरुषार्थ करना होगा। लेकिन आज कर्तव्यों पर जोर नहीं है, अधिकारों पर जोर है। मांग, हकूक, आन्दोलन, देश के एक कोने से दूसरे कोने तक रोजाना अखबार इन्हीं बातों से भरे रहते हैं और कहीं कोई फिक्र नहीं। आता है कोई राजनैतिक नेता, बिना इस बात की परवाह किये कि कौन खुश होगा, नाराज होगा, जनता को सही सीख दे। सही सीख देने वाला आज आदमी हिन्दुस्तान में नहीं रहा, महात्मा जी के चले जाने के बाद।

हमारे देश में प्राकृतिक सम्पदा की कमी नहीं है। अगरचे प्राकृतिक सम्पदा को देखते हुए हमारी आबादी बहुत ज्यादा है और बढ़ती जा रही है। डेढ़ करोड़ जनसंख्या हमारी हर साल बढ़ती जाती है। लेकिन फिर भी जो हमारी कमियां हैं, अगर उन कमियों को दूर करें, तो ये देश बहुत जल्दी दुनिया में अपना पुराना स्थान हासिल कर लेगा। आज दुनिया में सब देशों में हम ज्यादा गरीब हैं। कम से कम एक सौ पच्चीस देशों में स एक सौ दस देशों से ज्यादा गरीब हैं। केवल ग्यारह देश आपसे पिछड़े हुए हैं। बेरोजगारी बढ़ती जाती है, गरीब और अमीर का फर्क बढ़ता जाता है। जो थोड़े से मालदार लोग हैं, जैसे मेरे बायं हाथ मोदी साहब बैठे हैं, तो सारी सम्पत्ति इन्हीं के हाथों इकट्ठी होती जाती है, आम जनता के और इनके बीच में बहुत फर्क होता जाता है। तो ये समस्याएं हैं, जो देश को हल करनी हैं और वो हम लोगों को, सबको मिलकर हल करनी हैं।

मैं हिन्दू होने के नाते आपको तीन–चार सुझाव देना चाहूंगा। एक तो यहे कि कम से कम जो यहां नाजवान बैठे हैं वे यह भूल जायें यह कहना अपनी जबान से, कभी यह शब्द पैदा न करें कि दुनिया माया है, यह जाल है, यह मिथ्या जगत है। जो लोग, जो जवान आदमी और जो कौम दुनिया को मिथ्या समझती है, वह कभी तरक्की नहीं करती।

(रिकार्डिंग अपूर्ण है)

————0————